मालवा लघु चित्रण शैली में लोककला के तत्व

दयालबाग़ ऐजूकेषनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) आगरा से
चित्रकला में पी–एच॰ डी॰ की उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध–प्रबंध की रूपरेखा

2014

संकाय प्रमुख की संस्तुति हेतु

प्रो० रागिनी रॉय,
अध्यक्ष ड्राइंग एण्ड पेंन्टिग विभाग,
कला संकाय,
डी०ई०आई० डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा

शोध निर्देषिका

डॉ० मीनाक्षी ठाकुर
ड्राइंग एण्ड पेंन्टिग विभाग
कला संकाय,
डी०ई०आई० डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा

शोध छात्रा

कंचन कुमारी
ड्राइंग एण्ड पेंन्टिग विभाग
कला संकाय,
डी०ई०आई० डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा।

मालवा लघु चित्रण शैली में लोककला के तत्व

शोध संरचना

विषय सूची

शोध संकल्पना

साहित्यावलोकन

परिकल्पना

लक्ष्य एवं उद्देश्य

चरः—

कार्य प्रणालीः—

1—अनुसंधान अभिकल्प

2—यन्त्रः—

अ— प्राथमिक

ब— द्वितीयक

3—प्रतिदर्श

4—साक्षात्कार

5—प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया

6—सीमा

निष्कर्ष

वर्तमान परिदृश्य में अध्ययन की प्रासंगिकता

शोध संकल्पना

भारत में कला लोकरंजन का पर्याय माना गया है। यह भावाभिव्यक्ति, सौन्दर्यानुभूति की संवाहिका है। भारत में चित्रकला के नमूने हमें प्रागैतिहासिक काल से अजन्ता, जैन, मुगल, राजस्थान, पहाड़ी व मालवा शैलियों में परिलक्षित होते है। निःसंदेह, रूपमाधुर्य के सिंचन की यह प्रक्रिया भारत के हृदयस्थल में विद्यमान, मालवा क्षेत्र में भी हुई जिसका वर्णन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मालवा लघु चित्रण शैली में लोककला के तत्व में किया जाएगा।

भारतीय लघु चित्रकला के सन्दर्भ में 9वीं शताब्दी के पश्चात् भित्ति चित्रों का स्थान छोटे–छोटे लघु चित्रों (ताड़पत्र, भोजपत्र, पटचित्र, कपड़ा, कागज) आदि में ग्रहण कर लिया गया। भारतीय लघु चित्रकला विश्व के कला जगत में अपनी अलग पहचान रखते है। ये लघु चित्र युगों की गाथायें, प्रेम की कसक, सुख–दुखः की अनुभूतियाँ, छोटे–छोटे प्रयासों के निहितार्थ आकांक्षाओं के पारलौकिक आयाम अपने छोटे से पटल पर मूक रंग रेखाओं में पिरोये भारत के महान रचनाधर्मी व्यक्तित्व और सौन्दर्याबोध की सदियों लम्बी विलक्षण यात्रा के मूर्तिमान साक्षी है। इन्हीं विधियों को हम विभिन्न शैली की संज्ञा देते है। सभ्यता के विकास के साथ–साथ चित्रकला में धीरे–धीरे ताड़पत्र, भोजपत्र तथा कागज का आविर्भाव हुआ। लघु चित्र भी पोथी चित्र की परम्परा में ही आते है तथा उनका निर्माण एवं चित्रण विधि भी वहीं है। कागज पर निर्मित ऐसे चित्रों की संख्या बहुत अधिक है, जो संसार के विभिन्न संग्रहालयों में तथा संग्रहकर्ताओं के पास सुरक्षित है। भारतीय लघु चित्रण शैली जितनी प्रारम्भिक अवस्था में महत्वपूर्ण थी उतनी आज भी है।

पूर्वांचल, दक्षिणांचल, पश्चिमांचल, एवं उत्तरांचल के बीच भारत के हृदयस्थल में विद्यमान मालवा प्रदेश कवियों का व्यवहार क्षेत्र रहा है। आधुनिक मालवा क्षेत्र, मध्यप्रदेश के पश्चिमी सम्भाग के अर्न्तगत आता है। [1]मध्यप्रदेश में लघु चित्र शैली का प्रारम्भ मालवा से हुआ और माण्डु में ही चित्रित कल्पसूत्र 1437ई0 इस शैली के प्राचीनतम ज्ञात उदाहरण है।मालवा में 15वीं शतीं में माण्डु कल्पसूत्र वाली शैली दिखाई देती है जिसमें अपभ्रंश की जकड़न से मुक्ति दृष्टिगोचर होती है। 16वीं शतीं में नियामतनामा पाण्डुलिपि ईरानी–भारतीय मिश्रण का श्रेष्ठ उदाहरण है। [2]मालवा लघु चित्रों के विषय भी साहित्य व संयोग एवं वियोग की अवस्था पर आधारित है। मालवा लघु चित्रों की विषयवस्तु रामायण, महाभारत, भागवत् पुराण, कल्पसूत्र, रसवेली, रसिकप्रिया, लौरचन्द्रायन, रागमाला आदि पर आधारित है। मालवा के लघु चित्रों में आधुनिक संयोजन के सभी तत्वों का मिश्रण है। चित्र त्री आयामी न होकर द्विआयामी है। चेहरे के बाहर निकलती बड़ी–बड़ी आँखे, कोणाकार चेहरे, सामान्य कद की स्त्री–पुरूष आकृतियाँ, विशद प्रतीक विधान तथा स्वर्ण की भरमार इन कल्पसूत्र चित्रों की विशेषता है।

छोटा पटल, पटल का विभाजन, एक खाने में एक अलग प्रसंग का चित्रांकन, चटक आधारभूत रंगों का व्यापक इस्तेमाल लोककला शैली के तत्वों का समावेश और भावप्रवण चेहरे मालवा के लघु चित्रों की पहचान है। लोककला मानव सभ्यता के साथ उसका ही एक अंग बनकर कब से जुडी है, कहा नहीं जा सकता। लोककला शब्द का सबसे प्रमाणिक प्रयोग भरत के नाट्यशास्त्र में मिलता है। श्री. जी. एस. स्टीवेशन ने तो विचारधारा प्रस्तुत करते हुए यहाँ तक भी कहा है कि लोककला शुद्ध भावनापूर्ण अभिव्यक्ति है। भारतीय चित्रकला में लोककला एक अपना अलग अस्तित्व रखती है फिर चाहे वो किसी भी क्षेत्र में हो या लघु चित्रण ही क्यों न हो।

लोककला शब्द का प्रयोग दो अर्थो में किया जाता है पहला सामान्यतः लोक प्रचलित साहित्यिक कथा–कल्प, रीति–रिवाज, विश्वास, अपेक्षाकृत बौद्धिक प्रदेश में भारतवासियों का जीवन सदा से ही प्रचलित रहा है। इस कला की परम्परा का रहस्योद्घाटन मोहनजोदड़ों एवं हड़प्पा की परम्परा में प्राप्त होता है। लोककला के सभी तत्व महत्वपूर्ण है। छोटी से छोटी रेखा भी कई बार किसी चित्र को एक बड़ा फलक देने में सामर्ध्य रखती देती है। मालवा कला लोककला जो शास्त्रीय बन्धनों से मुक्त है इसी कारण इसकी ऐतिहासिक परम्परा

1.गैरोला, बाचस्पति– भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, इलाहाबाद, 1972.

2.हरिहरनिवास, द्विवेदी एवं विनयगोविन्द– मध्यभारत का इतिहास भाग–एक, ग्वालियर, 1956.

का अपना अलग रूप है। मालवा लघु चित्रण में लोककला के तत्व में काव्य और कलाओं को एक ही धरातल पर प्रतिष्ठित करने की चेष्ठा की गयी है।

चित्रकार प्रतिक्षण प्रकृति के विराट सतरंगी प्रभावों से प्रभावित होता रहता है, जिससे प्रभावित होकर वह विभिन्न रूप आकार की सृष्टि कर चित्र की रचना करता है। मालवा शैली के इन चित्रों में समय एवं वातावरण का विषयानुरूप सफल चित्रण दर्शनीय है। जिसमें लोक के तत्व दृष्टिगोचर होते है।

साहित्यावलोकन–

किसी भी शोधकार्य की शुरूआत करने से पूर्व विषयचयन का होना अनिवार्य है। मेरे शोधकार्य का विषय मालवा लघु चित्रण में लोककला के तत्व है। अपने विषय से सम्बन्धित मैनें कई पुस्तकों का अध्ययन किया। जिनसे मुझे विषय पर शोध कार्य करने में सहायता मिली। Anand Krishna की पुस्तक 'Malwa Painting' से मैनें मालवा का इतिहास व कलात्मक विकास की जानकारी प्राप्त की। आर0 ए0 अग्रवाल की पुस्तक 'भारतीय चित्रकला का विवेचन'से लघु चित्रकला का विवरण मिला। प्रेमशंकर द्विवेदी की पुस्तक 'भारतीय चित्रकला को बनाने की पद्धति' से लघु चित्रकला के बारे मे जाना।Dr. Daljeetऔर P.C Jain की पुस्तक Indian Miniature Painting : Manifestation of the Creative Mindसे मैनें मध्यभारत में स्थित मालवा के बारे में जानकारी हासिल की। शोध कार्य सम्बन्धित कई पुस्तकों, बेबसाइट्स, सामाचार–पत्र, पत्रिकाऐं, सूचिपत्र (कैटलॉग), व छायाचित्रों से सहयोग मिला। विषयचयन के दौरान मैनें दिल्ली राष्ट्रीय संग्रहालय का भ्रमण किया और वहाँ के चित्रकला क्यूरेटर डा0 वी0 के0 माथुर से मिली और साक्षात्कार से मुझे शोध कार्य की रूपरेखा निर्धारित करने में सहायता मिली।

परिकल्पना –

किसी भी शोध कार्य को करने से पूर्व शोध कार्य की सफलता हेतु परिकल्पना का सांचा तैयार करना अति आवश्यक है। मनुष्य के सृजनात्मक बाह्य मूर्त रूप को जिस सन्तुलन, अनुपात और सामान्जस्य के कौशल, मनोभावों के आनन्द व अनुपम अनुभूति उत्पन्न करने वाली लघु चित्र शैली का अध्ययन।
कला के विभिन्न रूप देश–विदेश के अनेक स्थानों में देखने को मिलते है। जो कि सदियों पुरानी कला के अस्तित्व को जीवित रखे हुए है, जो हमें सम्पूर्ण जन जीवन व संस्कृति के दर्शन कराते है। जिसे देखने के पश्चात् मुझे लोककला को और अधिक जानने की जिज्ञासा हुई इसलिए मैनें अपने शोध हेतु इस विषय को चुना। जिसमें मैं लघु चित्रण में लोककला चित्रों का कलात्मक व सौन्दर्यात्मक अध्ययन करने का प्रयत्न करूंगी। साथ ही साथ लघु चित्रण शैली तथा लोककला चित्रण से जुड़े विभिन्न कलाकारों के साक्षात्कार के द्वारा इस कला के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहूंगी। स्थानीय अन्य इस कार्य से सम्बन्धित लोगों से मिलकर जानकारी प्राप्त करूंगी। मालवा लघु चित्रण में लोककला के तत्वों व इसके अलंकरणों का कलात्मक अध्ययन करूंगी।

लक्ष्य एवं उद्देश्य–

मालवा लघु चित्रण शैली में लोककला के तत्व पर शोधकार्य प्रस्तुत करना व प्रमुख रूप से मालवा के भौगोलिक, ऐतिहासिक, व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को जानकर लघु चित्रण शैली व लोककला के तत्वों व उसके अलंकरणों पर कार्य करना व उसके कलात्मक सौन्दर्य को उजागर कर प्रकाश में लाना है। मध्यभारत में इस तरह की सौन्दर्यात्मक चित्रकला के क्या कारण रहे? क्या यहाँ के लोगों की अभिरूचि ऐसी रही या प्रारम्भ से

ही यहाँ के राजाओं या धनिक वर्ग की रूचि चित्रकला में रही है आदि इन सभी दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर व लोककला का विकास कैसे हुआ आदि का कलात्मक अध्ययन व भारतीय कला जगत में मालवा लघु चित्रण शैली का महत्व एवं आधुनिक परिवेश में क्या योगदान को जानना मेरे शोध कार्य का उदेश्य है।

चर–

राष्ट्रीय संग्रहालय(नई दिल्ली) एवं पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग(आगरा) आदि।
–संग्रहीत मालवा लघु चित्र– राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली, भारत कला भवन, बनारस।
–संग्रहालय के प्रबन्धक एवं सहायक
–कला समीक्षक
–विभिन्न संग्रहालय

कार्य प्रणाली–

अनुसंधान अभिकल्प–

वस्तु विश्लेषण विधि के अर्न्तगत वर्णनात्मक अनुसंधान विधि शोध कार्य में मालवा लघु चित्रण शैली में लोककला के तत्वों का अलंकरणों व सौन्दर्य का अध्ययन।

प्रदत्त संकलन–

प्राथमिक एवं द्वितीयक।

प्राथमिक –

राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में संग्रहित मालवा लघु चित्रण एवं विभिन्न राजकीय संग्रहालय एवं साक्षात्कार।

द्वितीयक–

पुस्तकें, प्रकाशित पत्र–पत्रिकाऐं, सामाचार–पत्र, कैटलॉग, बेबसाइटस्, शोध–निर्देशक के साथ विचार विमर्श, संग्रहालयों के भ्रमण आदि।

प्रतिदर्श–

मालवा लघु चित्रण शैली में लोककला के तत्व पर आधारित छायाचित्र लगभग – 150–200

साक्षात्कार–

विभिन्न इतिहासवेत्ताओं व साहित्यकारों से, संग्रहालय संरक्षक व पुरातत्ववेत्ताओं से सम्पर्क एवम् उनसे साक्षात्कार।

सीमा–

कार्य एवं समय सीमा को ध्यान में रखते हुए मालवा लघु चित्रण शैली में लोककला के तत्व–एक अध्ययन पर कार्य करूंगी।

निष्कर्ष–

उपसंहार के रूप में मालवा लघु चित्रण शैली में लोककला के तत्वों की चर्चा करना एक श्रेयपूर्ण एवं सुखद कर्तव्य है।मालवा लघु चित्रण शैली में लोक–परम्परा लम्बे समय से अक्षुण्ण दिखाई देती है। लोककला किसी भी देश की क्यों न हो वह अपना अलग अस्तित्व रखती है हर श्रेत्र में लोककला का महत्वपूर्ण स्थान है फिर चाहे वो भित्ति चित्रण, स्थापत्य कला या लघु चित्र कला ही क्यों न हो। लोककला हमारे भौगोलिक, सांस्कृतिक महत्व को दर्शाती है। मालवा की लघु चित्रण शैली व लोककला अपनी विशिष्टताओं के कारण भारत में ही नहीं अपितु संसार की महत्वपूर्ण कला शैली में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

आधुनिक युग में अध्ययन की प्रासंगिकता–

भारतीय कला जगत में मालवा लघु चित्रण शैली में लोककला के तत्वों का महत्व एवं आधुनिक परिवेश में क्या योगदान है तथा लघु चित्रण शैली जो कि बारिकी से बनाई गई कला है उसमें लोककला के क्या तत्व है इसे मैनें अपने शोध कार्य के जरिए उजागर कर प्रकाश में लाने की कोशिश करूंगी। जो आगे आने वाले शोधार्थी है उनके लिए मार्ग प्रशस्त करूंगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, भगवत् शरण – भारतीय कला का इतिहास, नई दिल्ली, 1984.
2. गैरोला, बाचस्पति – भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, इलाहाबाद,1972.
3. तिवारी, रघुनन्दन प्रसाद – भारतीय चित्रकला और उसके मूलतत्व, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारतीय पब्लिशिंग हाउस,1973.
4. हरिहरनिवास, द्विवेदी एवं विनयगोविन्द – मध्यभारत का इतिहास भाग–एक, ग्वालियर,1956.
5. बर्मा, महेन्द्र – भारतीय चित्रकला की परम्परा, भारतीय कला प्रकाशन, नई दिल्ली.
6. श्रोत्रिय, शुक्रदेव – भारतीय चित्रकला, *शोध–संचय,* 1997, भारतीय चित्रकला विषयक शोध लेखों का संकलन, चित्रायन प्रकाशन, आदर्श कालोनी, मुजफ्फरनगर, ISBN–251001.
7. द्विवेदी, प्रेमशंकर – भारतीय चित्रकला को बनाने की पद्धति, कला प्रकाशन, बी33/33 ए–1, न्यू साकेत कालोनी, बी.एच.यू. वाराणसी.
8. द्विवेदी, प्रेमशंकर – भारतीय चित्रकला के विविध आयाम, कला प्रकाशन, वाराणसी, 2007.
9. अग्रवाल, आर. ए. – कला विलास, भारतीय चित्रकला का विकास

BIBLIOGRAPLY

1. Krishna, Ananda - *Malwa Painting*, Bharat Kala Bhawan, Banaras Hindu University,1968.
2. Subramaniam,V.K - *A History of Indian Painting- Rajasthani Tradition*. Abhinav Publication.
3. Kuiper, Kathleen - *The Culture Of India*, The Rosan Publishing Group.
4. Chaitanya, Krishna - *History Of Indian Painting*-Rajasthani Tradition Abhinav Publication.
5. Daljeet, Jain P.C, Banwani Veena - *Indian Miniature Painting Manifestation Of a Creative Mind*,1965.
6. Khandalavala, Karl. J - *Miniature Painting: A Catalogue Of The Exhibition Of the Sri Motichand Khajanchi Collection held by the Lalit Kala Akedami*, 1960.
7. Bautza, Joachim - *Indian Miniature Painting*, Galerie Saundarya Lahari, Little Arts, 1987.
8. Jain, Kailash Chand - *Malwa through the ages, from the Earliest Times to 1305 A.D*, Motilal Banarasidas Publication.
9. Benarjee, P - *The Life of Krishna in Indian art*,National Museum, New Delhi, 1978.
10. Khare, M.D - *Malwa Through the Ages*, Bhopal, 1981.
11. Sivaramamurti,C - *Indian Miniature*, National Book Trust, New Delhi.
12. Leach, Linda York - *Indian Miniature Painting Drawing, Published By The Cleveland Museum Of Arts*, 1986, In Cooperation With Indiana University Press.
13. Chakraverty, Anjan - *Indian Miniature Painting*, Lustre.Press,1996.
14. Archer, Mildred - *Indian Miniature in the Indian Officer Library* Oxford University Press, Delhi-Karachi,1981.
15. Agarawala, R.A - *Wall Painting From Central India*, Agam Kala Prakashan, Delhi, 1987.

Internet Website

http:/www.Google.com.in/imeges?Malwaschool.
http:/www. Hi. wikipedia. Org./Malwa.
http:/www.Hi.wikipedia.Org./w/intex.php?title=मालवा solid=2367621.
http:/www.Malwa Miniature Painting.org.
http:/www.bharat discovery. Org./India.
http:/www.books. google. Com. In /books?
http:/www.lokchitrakala-folk painting of Madhya Pradesh.
http:/www.Indian Painting From Wikipedia and The Free encyclopedia.
http:/www.mphandicrafts.com.
http:/www.marg foundation.com.
http:/www.marg magazine.com.
http:/www.marg publication book of nimat nama.

पत्र–पत्रिकाऐं

1. कलानिधि अंक, 1 से 5
2. संस्कृति, वर्ष 26, अंक – 1, 1984, जनवरी मार्च
3. शोध पत्रिका, उदयपुर वर्ष 27, जुलाई सितम्बर, 1976

मालवा लघुचित्रण शैली में लोककला के तत्व
शोध संरचना

विषय सूची

भूमिका– भारतीय लघु चित्रण शैली का संक्षिप्त परिचय

अध्याय प्रथम– मालवा का भौगोलिक, ऐतिहासिक, एवम् सांस्कृतिक परिदृष्य

1.1–मालवा लघु चित्रण शैली का उद्‌भव एवम् विकास

अध्याय द्वितीय– भारतीय लोककला परम्परा, लोककला का इतिहास एवम् उत्पत्ति

2.1–लोककला का अर्थ, परिभाषा एवम् मूल्यांकन

2.2–लोककला के तत्व

अध्याय तृतीय– मालवा लघु चित्रण शैली की विषयवस्तु –

3.1– कल्पसूत्र

3.2– रामायण

3.3– महाभारत

3.4– देवी महात्म्य

3.5– रसिक प्रिया

3.6– बारहमासा

3.7– रागमाला

3.8– रसवेली

3.9– बुस्तान आफ सादी (बोस्तां–ए–सादी)

3.10– लोककहानियाँ, लोकगीत

अध्याय चतुर्थ– मालवा की लघु चित्रण शैली में लोककला के तत्व

4.1– रूपाकृतिअंकन– पुरूषरूपाकृतियाँ, नारीरूपाकृतियाँ, बालरूपाकृतियाँ

4.2– प्रकृति अंकन– वृक्ष, लताऐं, पशु–पक्षी, क्षितिज, पर्वत

4.3– आलेखन रूपाकृतियाँ

4.4– स्थापत्य अंकन

अध्याय पंचम– मालवा लघु चित्रण शैली की तकनीकी एवं माध्यम

5.1– चित्रण सामग्री – कागज एवं उसका प्रयोग

5.2– चित्रों में वर्ण विधान एवं उसका प्रयोग

5.3– तुलिका निर्माण पद्धति

5.4– मालवा लघु चित्रण में फलक संयोजन की सैद्धान्तिक प्रक्रिया–सहयोग, सामंजस्य प्रभुत्व, प्रवाह, संतुलन, प्रमाण

अध्याय षष्ठम्– मालवा लघु चित्रण में भावपक्ष का सौन्दर्यात्मक रूप

अध्याय सप्तम्– भारतीय कला जगत में मालवा लघु चित्रण शैली का महत्व एवं आधुनिक परिवेश में योगदान

निष्कर्ष –

परिशिष्ट – 1. चित्रसूची एवं मानचित्र 5. बेबसाइटस्

2. संदर्भ ग्रन्थ सूची 4. पत्र–पत्रिकाऐ

3. Bibliography 6. कला शब्द कोश व अन्य

अनुसंधान अभिकल्प

प्रथम अध्याय– प्रथम अध्याय में मैनें मालवा की भौगोलिक, ऐतिहासिक, एवं सांस्कृतिक विकास को रखा है तथा मालवा लघु चित्रण शैली का उद्भव एवं विकास का अध्ययन करूंगी।

द्वितीय अध्याय– द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत मालवा शैली में भारतीय लोककला परम्परा, व लघु चित्रण शैली की दृष्टि से चित्रों के लोक तत्वों केअध्ययन में लोककला का अर्थ, परिभाषा, तत्वों का अध्ययन।

तृतीय अध्याय–तृतीय अध्याय के अन्तर्गत मालवा लघु चित्रण शैली की विषयवस्तु एवंलोककला परम्परा के तत्वों का कलात्मक अध्ययन।

चतुर्थ अध्याय–चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत मालवा लघु चित्रण शैली में लोककला के तत्वों के अन्तर्गत रूपाकृतिअंकन, प्रकृति अंकन, आलेखन रूपाकृतियाँ, स्थापत्य अंकन का कलात्मक अध्ययन।

पंचम अध्याय– पंचम अध्याय के अन्तर्गत मालवा लघु चित्रण शैली की तकनीकी एवं माध्यम में चित्रण सामग्री, चित्रों में वर्ण विधान, व उसका प्रयोग, तूलिका़ निर्माण पद्धति तथा मालवा लघु चित्रण में फलक संयोजन की सैद्धान्तिक प्रक्रिया के बारे में बारिकी से जानकारी एकत्रित करने का प्रयास करूंगी।

षष्ठम् अध्याय– षष्ठम् अध्याय के अन्तर्गत में मालवा लघु चित्रण में भावपक्ष का सौन्दर्यात्मक रूप कैसे दिखाई देता है उसको प्रकाश में लाने की चेष्ठा करूंगी।

सप्तम् अध्याय– सप्तम् अध्याय के अन्तर्गत सम्पूर्ण कलात्मक पक्षों के आधार पर भारतीय कला जगत में मालवा लघु चित्रण शैली के महत्व एवं आधुनिक परिवेश में क्या योगदान है शोध कार्य के द्वारा प्रस्तुत करूंगी।

निष्कर्ष–मालवा की लघु चित्रण शैली व लोककला अपनी विशिष्टताओं के कारण भारत में ही नहीं अपितु संसार की महत्वपूर्ण कला शैली क्यों है तथा अपना क्या महत्वपूर्ण स्थान रखती है शोध कार्य में निष्कर्ष के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास करूंगी।

चित्र संख्या–01
मालवा शैली, लगभग 1437 ई0, भैरव राग, भारत कला भवन, बनारस

चित्र संख्या–02
मालवा शैली, लगभग 1634 ई0, कुम्भकरण निद्रा, भारत कला भवन, बनारस

चित्र संख्या–03
मालवा शैली, लगभग 1650 ई0, आसावरी रागिनी, भारत कला भवन, बनारस

चित्र संख्या–04
मालवा शैली, लगभग 1660 ई0, राम एवं उनके भाइयों का जन्म, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

चित्र संख्या–05
मालवा शैली, लगभग 1680 ई0, दूत संवाद, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

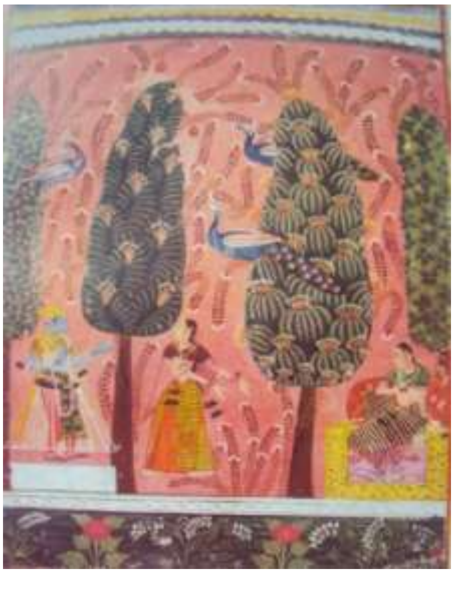

चित्र संख्या–06
मालवा शैली, लगभग 1670 ई0, नायिका,
भारत कला भवन,
बनारस

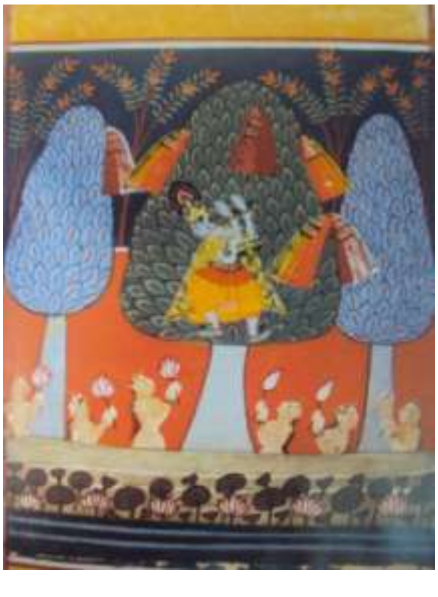

चित्र संख्या–07
मालवा शैली, लगभग 1690 ई0, चीरहरण लीला,
भारत कला भवन,
बनारस